(E - 110) हरी मोहे प्यारो सुपासको नाम

(प्रभुजी मेरे विनति धरजो ध्यान–राग)

हरी मोहे प्यारो सुपासको नाम.....
प्यारो सुपासको नाम; हरी०
वंछित पूरण नाम तिहारो,
सब सुखको विसराम..... हरी० १

भव भय भंजन जन मनरंजन,
गंजन पापको ठाम; हरी०
सुरपति नरपति अहनिशि सेवे,
शिव सुखकी अेक हाम.....हरी० २

तीन लोकके स्वामी सोहिअे,
मोहन गुणमणि धाम; हरी०
जगजन तारन भवदुःख वारन,
भक्तवत्सल भगवान.....हरी० ३

जोगासन धरे जोगीश्वरकुं,
ज्यों महा मंतसो काम; हरी०
तैसें समरन तेरो अहनिशि,
करते सेवक गुनग्राम....हरी० ४